International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(II), July- September, 2025, pp. 30-34

महिला सशक्तिकरण में गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका

अनिता गौत्तम[1*] | डॉ. वंदना राठी[2]

[1]शोधार्थी, महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
[2]सहायक आचार्य, महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: gautamanita141@gmail.com

Citation: गौत्तमअनिता, & राठीवंदना. (2025). महिला सशक्तिकरण में गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(II)), 30–34. https://doi.org/10.62823/ijemmasss/7.3(ii).7918

सार

डॉ भीमराव अंबेडकर *– ''मैं किसी समुदाय की प्रगति को महिलाओं द्वारा हासिल की गई प्रगति के स्तर से मापता हूँ।''*

भगवान ने जब से खूबसूरत दुनिया बनाई तब महिला एवं पुरुष दोनों को समान शक्ति, सम्मान, प्रतिभा एवं समान अधिकार प्रदान कर इस दुनिया में भेजा। इन दोनों में कही विभेद नहीं किया। महिलाएं किसी भी सभ्य समाज की आधारशिला है चाहे किसी भी प्रकार की शासन व्यवस्था हो आज महिलाएं प्रत्येक शासन व्यवस्था में देश की अभिन्न अंग है। एक राष्ट्र को सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब महिलाओं को समाज में उनका यथोचित स्थान एवं पद दिया जाये एवं उन्हें पुरुषों के साथ विकास में बराबरी की सहभागी बनाया जाए।

शब्दकोशः *महिला सशक्तिकरण, गैर–सरकारी संगठन, सर्वांगीण विकास, शासन व्यवस्था, प्रतिभा एवं समान।*

प्रस्तावना

नारी सृष्टि की अनुपम रचना है। सृष्टि की रचना में नारी और पुरूष की समान भूमिका मानी जाती है। परिवार और समाज निर्माण में नारी का स्थान महत्वपूर्ण होता है।

जार्ज हर्बर्ट के मतानुसार – ''एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है इसलिए उसका हर हालत में सम्मान करना चाहिए।''

विश्व में मातृ शक्ति से अधिक और कोई भी पूजनीय नहीं है। परिवार में प्रेम. वात्सल्य, मां की ममता, अनुराग की प्रतिभूति तथा गृहस्थ जीवन को सफलतापूर्वक संचालित करने वाली शक्ति का नाम ही महिला है।

स्त्री और पुरुष के पुरुष ये दोनों ही एक दूसरे के पूरक है किंतु नारी के बिना दुनिया का कोई अस्तित्व नहीं है मनुस्मृति में स्पष्ट लिखा है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

किसी भी देश के सांस्कृतिक विकास का निर्माण नारियों पर अधिक निर्भर करता है तभी तो नेपोलियन **बोनापार्ट** ने कहा था – ''तुम मुझे एक योग्य माता दे दो मैं तुम्हें एक योग्य राष्ट्र दूंगा।''

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार हमारी जाति के ह्रास का मुख्य कारण शक्ति के इन प्रतिरूपों के प्रति आदर का अभाव है। महिलाएँ ईश्वर द्वारा प्रदान की गयी, उन नायाब तोहफों में से एक है जिसे उसने के विकास के लिए समाज एव सभ्यता के लिए और विश्व को स्वर्ग बनाने के लिए निरूपित किया है। महिलाएँ सामाजिक मूल्यों एवं परंपराओं की संरक्षक है तो समय पड़ने पर अपने सहयोगी की दिशा निर्देशक भी है। महिलाओं के बिना मानव के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती, परंतु आज संपूर्ण विश्व में महिलाएँ किसी न किसी रूप में असमानता, अत्याचार एवं शोषण की शिकार किसी न किसी रूप में हो रही है।

आज प्रत्येक स्तर पर सशक्तिकरण हेतु महिलाये विश्व में हर स्थान में संघर्षरत है। इस सशक्तिकरण में समाज, पुरुषवादी मानसिकता तथा स्वयं महिलाये किसी न किसी रूप में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ

सशक्तिकरण का अभिप्राय है शक्ति प्रदान करना अर्थात शारीरिक एवं मानसिक गतिविधि के संपादन की क्षमता प्रदान करने में विचार पाना ही सशक्तिकरण है। महिलाओं का स्वविकास ही उनके सशक्तिकरण को इंगित करता है।

महिला शब्द संस्कृत के मह् धातु से इलच् टाप् प्रत्यय जोड़ने पर बनता है। जिसका अर्थ है सबके द्वारा सम्माननीय।

महिला सशक्तिकरण से अभिप्राय है महिला को विभिन्न प्रकार की शक्तियों से युक्त करना, जिससे वह विभिन्न क्षेत्रों में अपने मौलिक अधिकारों का पूर्णतया उपभोग करने हुए स्त्री जीवन की उपलब्धियों का संवर्धन कर सके अर्थात जब हम शक्ति या क्षमता के प्राधिकारी संदर्भ में महिलाओं के विशेष अधिकार एवं कर्त्तव्य का बोध कराते है। उन्हें समाज या समुदाय से जुडे मुद्दों पर निर्णय लेने अथवा नीति लागू करने की क्षमता प्रदान करते है तो यह प्रक्रिया महिला सशक्तिकरण की ओर संकेत करती है।

अत्यंत सरल शब्दों में महिला सशक्तिकरण का अर्थ है – महिलाओं को शक्तिशाली बनाना इसका तात्पर्य यह है कि महिलाएं समाज में शक्तिहीन है इसलिए उन्हें शक्तिशाली बनाना।

महिला सशक्तिकरण से आशय उन सामान्य अर्थो से लगाया जाता है जो अपनी क्षमताओं और शक्तियों का पूर्णरूप से उपयोग कर सके जिससे वे स्वंय निर्णय लेने की स्थिति में आ सकती है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिलाओं को अधिकार देना या उन्हें पुरूषों के समान बनाना नही है, बल्कि इसका अर्थ है महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत रूप से सशक्त बनाना, जिससे वे अपनी क्षमता का पूरा उपयोग कर सके और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकें।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ वास्तव में महिला को शक्ति प्रदान करना है, न कि पुरुष को वर्चस्व प्रदान करना है। इसका तात्पर्य महिलाओं को समाज के प्रत्येक स्तर पर सही मूल्य प्रदान करना और उनकी उचित भागीदारी सुनिश्चित करना है,

महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य यह है कि उनको समाज में इस तरह का अधिकार व सम्मान प्राप्त हो सके जिससे समाज में उनके अस्तित्व की पहचान एक अबला के रूप में ने होकर सबला के रूप में हो।

महिला सशक्तिकरण वास्तविक अर्थों में महिला को इस योग्य बनाना है कि वे अपनी बुद्धिमता, अपनी सुविधाओं, अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं को प्रत्यारोपित कर सके और अपने अंदर निहित ऊर्जा को पहचानने एवं विचार, कथन और कार्य करने की आजादी के साथ – साथ अपनी निजी जिंदगी के प्रत्येक क्षेत्र को स्वशक्ति द्वारा संचालित कर सके। यह मात्र उन्हें अपनी क्षमताओं के प्रति जागरूक करना नहीं है वरन् उन्हें वह अवसर, सुविधाएँ, आंतरिक एवं बाह्या वातावरण उपलब्ध कराने से है जिससे कि वे अपने आत्मविश्वास, आत्मबल, सामाजिक, आर्थिक आत्मनिर्भरता का विकास कर सके और साथ ही साथ अन्याय, प्रताडना और अपने ऊपर हाक रहे हिंसा के विरूद्ध आवाज उठाने की योग्यता विकसित कर सके।

विभिन्न कालों में महिलाओं की स्थिति

- **प्राचीन काल** – प्राचीन काल के भारतीय समाज में महिलाओ का महत्वपूर्ण स्थान रहा, वे सदा से समाज की प्रेरणा स्त्रोत रही, पुरातन काल में ऐत्रेई, इन्द्राणी, सूर्या, सावित्री, दक्षिणा, गार्गी, अपाला लोपमुद्रा आदि विदुषियों का उल्लेख है। वेदों में स्त्रियों का उल्लेख सम्मानजनक ढंग से किया गया है।
- **बौद्ध काल** – भगवान बुद्ध ने संघ में जातिवाद या लिंगभेद को कोई स्थान नहीं दिया, उनकी दृष्टि में सभी लोग समान थे। महात्मा बुद्ध द्वारा संघ में स्त्रियों को प्रवेश दिया जाना एक युगांतकारी घटना थी।
- **मध्य काल** – सातवीं शताब्दी के अंत मे मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर आक्रमण किया जिसके साथ ही मुसलमान शासको का प्रभुत्व बढने लगा। इसी युग में विदेशी आक्रांताओं से बचने के लिए स्त्रियां जौहर की अग्नि में भस्म होने लगी। विदेशियो के आक्रमण के बाद हमारे देश और समाज में महिलाओं की की स्थिति अत्यंत दयनीय होती चली गयी अनेक कुरीतियाँ व्याप्त होती रही। उनकी शिक्षा पर ध्यान कम दिया जाने लगा और उन्हें घरेलू कामकाजों के लिए ही उपयुक्त माना जाने लगा, उन्हें घूंघट में कैद कर दिया गया तथा विवाह पश्चात् घर – गृहस्थी संभालना ही उनकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी बन गई। समाज में महिलाओं उत्पीड़न होता रहा और सही प्रथा, बाल विवाह जैसी अनेक कुरीतियों ने भारत में महिलाओं का जीवन अत्यंत दुरुह बना दिया।
- **आधुनिक काल** – स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् महिलाएं धीरे – धीरे शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढती रही और वर्तमान तक आते – आते उन्होंने समाज में अपनी एक महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित जगह बना ली उनके सशक्तिकरण में दशकों लग गए। भारत की महिलाएँ वर्षों से अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती रही है। वर्तमान में महिलाओ की स्थिति में काफी सुधार हुआ है, किन्तु, आज भी उन्हें कई पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आज भी कुछ समाज महिलाओं को पर्दे में रखने के पक्षधर है।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

महिलाओं में नेतृत्व करने की क्षमता सहज रूप से विद्यमान होती है भारत अब प्रगति के पथ पर अग्रसर है ऐसे में अगर वह अपनी आधी आबादी के सशक्तिकरण व विकास पर ध्यान नहीं देगा तो सफलता उससे कोसो दूर रहेगी इसलिए अब लैंगिक समानता और सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान हुए लगभग सभी क्षेत्रों में महिलायों की भागीदारी को सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया जा रहा है और उन्हे अपनी क्षमता अनुसार महत्वपूर्ण पद और जिम्मेदारियाँ संभालने के अवसर प्राप्त हो रहे है।

जहाँ आधी आबादी को उनके अधिकार नहीं मिलते, उन्हें दबाया या कुचला जाता है, वह देश या समाज कभी विकास कर पाता। कोई देश तभी उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकता है, जब उसके समाज में लैंगिक समानता हो, अर्थात समाज में महिलाओ तथा पुरुषों को समान रूप से दायित्व, अधिकार और रोजगार प्राप्त हों ।

समाज में भेदभाव की स्थितियां देश के विकास में बाधा पहुंचाती है। भारत की महिलाएँ वर्षों से अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती रही है।

वर्तमान में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता में सबसे प्रमुख बाधाये अशिक्षा, बालिका भ्रूण हत्या, लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा, आर्थिक परावलम्बन उनके प्रति बढ़ते यौन अपराध, अधिकारों तथा कर्तव्यों की जानकारी का अभाव, निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी अवहेलना, पुरुष प्रधान समाज, चेतना का अभाव तथा हमारा सांस्कृतिक परिदृश्य आदि है।

हमारा समाज मूल रूप से पुरुष प्रधान रहा है। पहले महिलाओं के पास किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता ना होने के कारण उनकी स्थिति एक पराश्रित से अधिक नही थी। सामाजिक व पारिवारिक आजादी के बाद से ही महिला उत्थान के उद्देश्य से विभिन्न प्रयास किये जाते रहें है। एक ओर जहां केन्द्र व राज्यों की सरकारे महिला उत्थान की नई – नई योजनाएं बनाने में लगी है वही कई गैर सरकारी संगठन वाकई कारगर सिद्ध हो सकते है।

महिला सशक्तिकरण के आयाम

सशक्तिकरण की प्रक्रिया की, सफलता के लिए सामाजिक जीवन के आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक आयामों में एक साथ और एक ही समय परिवर्तन लाना आवश्यक है।

महिला सशक्तिकरण के आयाम निम्न है –

- राजनीतिक आयाम
- आर्थिक आयाम
- सामाजिक आयाम
- **राजनीतिक आयाम –** राजनैतिक सशक्तिकरण का तात्पर्य एक ऐसी राजनीतिक प्रणाली जो राजनैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी और नियंत्रण का समर्थन करें। जवाहर लाल नेहरू द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य ''लोगों को जगाने के लिये महिलाओं का जाग्रत होना जरूरी है।'' जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की और उन्मुख होता है भारत की राजनीति में आज भी महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। चुनाव में भाग लेने वाली और निर्वाचित होने वाली महिला सदस्यों की संख्या बहुत कम है।
- **आर्थिक आयाम** – आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ है ऐसी पोषणीय जीविकाओं द्वारा बेहतर ढंग का भौतिक जीवन यापन जिनकी स्वामिनी और प्रबंधक महिलायें है आर्थिक सशक्तिकरण, महिला सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है।

वित्तीय सहायता के लिए महिलाओं का अपने परिवारों पर निर्भर रहना अक्सर धन की कमी का कारण बनता है घरों में महिलाओं को घर से बाहर निकाल कर नौकरी करने की अनुमति नहीं दी जाती और यदि वे नौकरी करती भी है तो उन पर घर और ऑफिस का इतना अधिक बोझ बढ जाता है कि मजबूर होकर उन्हें नौकरी छोडनी पड़ती है।

- **सामाजिक आयाम** – महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण महिलाओं को समाज में समान अधिकार अवसर और सम्मान दिलाने की प्रक्रिया है। इसमें महिलाओं को अपने जीवन पर नियंत्रण रखने, निर्णय लेने और अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने से सक्षम बनाना शामिल है।

महिलाओं के खिलाफ दुनिया में हर जगह प्रचलित है। भारतीय समाज में प्रायः महिलाओं को घरेलू कार्य के ही अनुकूल माना गया है। महिलाओं के मुद्दों से संबंधित विभिन्न सामाजिक संगठनों में भी महिलाओं की न्यूनतम संख्या लैंगिक असमानता के विकराल रूप को व्यक्त करती है।

- **गैर सरकारी संगठन** – गैर सरकारी संगठन उन संगठनों को संदर्भित करते है जो समाज सेवा की भावना से प्रेरित सामाजिक कार्यकर्त्ताओं और बुद्धिजीवियों द्वारा बनाए गए है, जिनका उद्देश्य समाज के कल्याण और विकास के लिए कार्यक्रम बनाकर स्थानीय लोगों की पूर्ण भागीदारी प्राप्त करना है।
- **महिला सशक्तिकरण में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका** – महिला सशक्तिकरण में एन. जी. ओ (गैर सरकारी संगठन) की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। वे महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों तक पहुँच प्रदान करने, सामाजिक बाधाओं को तोडने और उनके अधिकारों के लिए लड़ने में मदद करते है।

एन.जी. ओ. की भूमिका

- **जागरुकता और वकालत** – एनजीओ महिलाओं को उनके अधिकारों और सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूक करते है, जैसे कि लिंग आधारित हिंसा, बाल विवाह और शिक्षा तक पहुंच, वे नीतिगत बदलावों और सामाजिक सुधारों की वकालत भी करते है।
- **शिक्षा और कौशल विकास –** एनजीओ महिलाओं को शिक्षा और कौशल विकास के अवसर प्रदान करते है, जिससे वे आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सके। वे व्यावसायिक प्रशिक्षण, स्वरोजगार के अवसर, और वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।
- **स्वास्थ्य सेवाएं** – एनजीओ महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते है, जिनमें गर्भावस्था देखभाल, प्रसवोत्तर देखभाल और परिवार नियोजन शामिल है, वे ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में स्वास्थ्य क्लीनिक और चिकित्सा शिविर भी स्थापित करते है।
- **कानूनी सहायता** – एनजीओ महिलाओं को कानूनी सहायता प्रदान करते हैं। जिससे वे अपने अधिकारों की रक्षा कर सकें और न्याय प्राप्त कर सके।
- **आर्थिक सशक्तिकरण** – एनजीओ महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाते है, जैसे कि स्वयं सहायता समूहों का गठन, सूक्ष्म वित्तपोषण और व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि।
- **सामाजिक परिवर्तन** – गैर सरकारी संगठन भारतीय समाज में व्याप्त हानिकारक लैंगिक मानदंडो और रूढियों को चुनौती देने के लिए काम करते हैं। वे लैंगिक समानता महिला अधिकारों और बालिका शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देने के लिए अभियानो, कार्यशालाओं और सामुदायिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं।

निष्कर्ष

एन. जी. ओ महिला सशक्तिकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। वे महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, कानूनी अधिकारों और आर्थिक अवसरों तक पहुंच प्रदान करके जागरुकता अभियान चलाकर सामाजिक बाधाओं को तोडकर सशक्त बनाने में मदद करते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **देवी, प्रवीणा –** महिला सशक्तिकरण आज के संदर्भ में
2. **द्विवेदी, जे. रमेश प्रसाद –** भारत में महिला सशक्तिकरणः अवधारणा व मुद्दे
3. **जाट, सीमा –** महिला सशक्तिकरण एक पहल
4. **मिश्रा, रंजना 2024 –** महिला सशक्तिकरण के विना देश का विकास संभव नही (प्रतियोगिता दर्पण)
5. **रेडी, राम राज –** महिला एवं महिला सशक्तिकरण
6. **सौभरी, मीनाक्षी –** ग्रामीण महिला सशक्तिकरण और स्व–सहायता समूह
7. **सिंह, शोभ व तिवारी, अनुजा** – महिला सशक्तिकरण यथार्थ और चुनौतियाँ (महिलायें – शैक्षिक, सामाजिक स्थिति)
8. **तिवारी, आशीष कुमार –** महिला सशक्तिकरण : भारतीय परिदृश्य अवलोकन
9. यादव, विरेन्द्र सिंह – महिला सशक्तिकरण और समाज, नई सदीं में महिला सशक्तिकरण के विविध सरोंकारों का मूल्याकंन, ISBN – 9789388249911
10. https: // www-jagranjosh.com
11. https//:social. work in >gair. sarkari

❑❑❑